मन का मीत। by Sheetal Pandey

ओ बाबा ओ बाबा तुमसे नहीं है कोई शिकवा गिला मुझको जो कुछ मिला तेरे दर से मिला ओ बाबा
बन के मन का मीत मेरे मुझको मिला तू तुमने पोंछ डाले मेरी अँखियो के आंसू ओ बाबा हाय ओ बाबा सर पे हाथ धर के दिया मुझे हौंसल मुझको जो कुछ मिला तेरे दर से मिला ओ बाबा
रूठा ज़माना एक तू ही नहीं रूठा मुझसे है बाबा तेरा दर नहीं छूटा ओ बाबा हाय ओ बाबा दर तेरे आने का ना टूटा सिलसिला मुझको जो कुछ मिला तेरे दर से मिला ओ बाबा
रोमी को तेरे रहते कुछ ना कमी है बड़ी मौज से कटरही ज़िन्दगी है ओ बाबा हाय ओ बाबा भक्ति का तेरी पाया ऐसा सिला मुझको जो कुछ मिला तेरे दर से मिला ओ बाबा